सभी प्रकार की सरकारी सहायताओं से मुक्त, खोजी पत्रकारिता का तेज बढ़ता अखबार

दैनिक

themovementofindia.in

द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया

RNI No. RAJHIN/2012/48876
पोस्टल पंजीयन नं. भीलवाड़ा / 2025-2027

खोजी खबरें-तेज नजरें

प्रेरणा स्रोत - स्व. चुन्नीलाल सालवी

ये अखबार ही नहीं क्रांति का अभियान है। मानवता एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी, ये दुष्टों की मौत का सामान है।

वर्ष - 14 अंक -28 | 22 जुलाई 2025,मंगलवार | संपादक - दयाराम दिव्य | सहसंपादक - चाहत सालवी | मूल्य - 2 रू.

जजों पर अपमानजनक टिप्पणी मामला-विकास दिव्यकीर्ति पेशी पर नहीं पहुंचे:वकील ने लगाई हाजिरी माफी

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

जजों पर अपमानजनक टिप्पणी के मामले में आज अजमेर की न्यायिक मजिस्ट्रेट संख्या 2 कोर्ट में सुनवाई हुई। कोचिंग संस्थान के संचालक विकास दिव्यकीर्ति को अजमेर की न्यायिक मजिस्ट्रेट के सामने पेश होना था। लेकिन वह पेशी पर नहीं आए।

विकास दिव्यकीर्ति के वकील ने कोर्ट में हाजिरी माफी अर्जी लगाई गई। वहीं परिवादी के वकील ने भी कोर्ट में गिरफ्तारी वारंट जारी करने के लिए प्रार्थना-पत्र लगाया गया। कोर्ट की ओर से दोनों पक्षों को सुना गया। इसके बाद विकास दिव्यकीर्ति के वकीलों को पाबंद किया गया कि 2 अगस्त को वे सशरीर कोर्ट में हाजिर हो।

दरअसल, दृष्टि आईएएस कोचिंग के संचालक विकास दिव्यकीर्ति के एक वीडियो %द्वारा वर्सेस जज- कौन ज्यादा ताकतवर% के बाद खड़ा हुआ था। वीडियो में दिव्यकीर्ति ने द्वारा को पावरफुल बताया था। इसके बाद वकील कमलेश मंडोलिया की शिकायत पर अजमेर के न्यायिक मजिस्ट्रेट संख्या-2 के पीठासीन अधिकारी मनमोहन चंदेल की अदालत ने मामला दर्ज कर संबंधित पक्षों को नोटिस जारी किए थे।

बहस पूरी होने के बाद न्यायाधीश ने 40 पेज के आदेश में कमलेश मंडोलिया की ओर से पेश किए मानहानि केस को आंशिक रूप से स्वीकार कर लिया था। कोर्ट ने विकास दिव्यकीर्ति को कोर्ट में पेश होने के आदेश दिए। विकास दिव्यकीर्ति के ओर से अजमेर कोर्ट के आदेश के खिलाफ तीन दिन पहले हाईकोर्ट में अपील दायर की गई थी। विकास दिव्यकीर्ति के वकील पुनीत सिंघवी ने बताया था कि दिव्यकीर्ति की ओर से बताया गया कि उन्होंने किसी की भावना को आहत नहीं किया है। इस मामले में सोमवार को हाईकोर्ट में सुनवाई भी नहीं हुई।

अफसरों का कारनामा,भीलवाड़ा में 1200 फीट चौड़ी सड़क प्रस्तावित की

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा के नए मास्टर प्लान में एक बड़ी गड़बड़ी ने पूरे प्रदेश का ध्यान खींच लिया है। अधिकारियों ने मास्टर प्लान में शहर के भीतर 1200 फीट चौड़ी सड़क प्रस्तावित कर दी। भीलवाड़ा के प्रॉपर्टी डीलर्स के मुताबिक नगर विकास न्यास ने मास्टर प्लान में भारत की सबसे चौड़ी सड़क का प्रस्ताव तैयार कर दिया। वहीं मामला सामने आने पर अधिकारियों के मुताबिक ये तकनीकी गड़बड़ी है, इसे सुधार लिया जाएगा। वहीं विशेषज्ञ इसे 'कागजी विकास' की एक और मिसाल बता रहे हैं। भीलवाड़ा प्रॉपर्टी डीलर एसोसिएशन के सदस्य राजकुमार टेलर ने मैप को लेकर तंज कसा, कहा- भीलवाड़ा के मास्टर प्लान में अगर 1200 फीट चौड़ी सड़क है तो शायद यह देश की सबसे चौड़ी सड़क होगी।

गहलोत बोले-दबाव में काम करने वाला अचानक इस्तीफा देता है:धनखड़ परिवार से मेरे 50 साल से संबंध

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

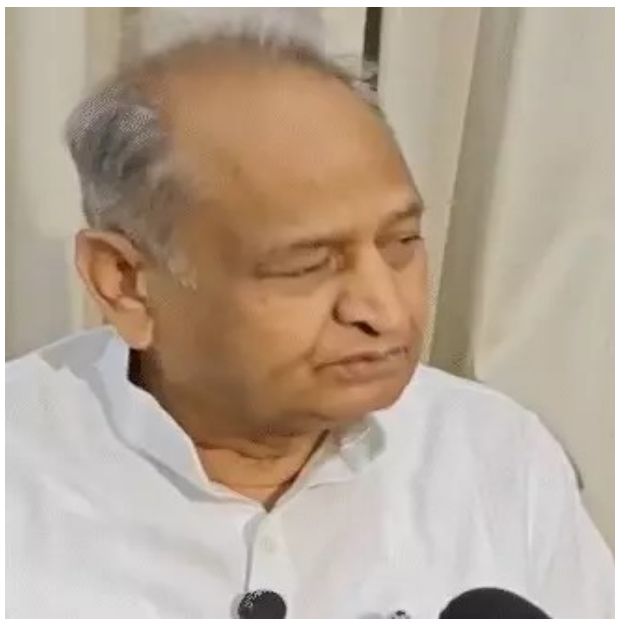

पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने जगदीप धनखड़ के उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफे के पीछे असली वजह को लेकर आरएस,बीजेपी पर सवाल उठाए हैं। गहलोत ने पूरे मामले को संशय पैदा करने वाला करार देते हुए इसे आरएसएस बीजेपी पर देश में नया राजनीतिक घटनाक्रम या मूव चलाने की चाल से जोड़ा है।

गहलोत ने कहा- जगदीप धनखड़ संसद के बाहर और अंदर लगातार किसानों से जुड़े मुद्दे लगातार उठा रहे थे। एक बार उन्होंने कृषि मंत्री को भी किसानों के मुद्दे पर खरी खोटी सुनाई थी। मुझे पता नहीं क्यों लग रहा था कि लोकसभा अध्यक्ष और उपराष्ट्रपति दबाव में हैं। तब मैंने जोधपुर में बयान दिया था। अब उपराष्ट्रपति के इस्तीफे से सच्चाई सामने आ गई है। दबाव में काम करने वाला व्यक्ति ही अचानक इस्तीफा देता है। अब असलियत क्या है यह तो पीएम, गृह मंत्री दो ही लोगों को पता है।

गहलोत ने कहा- मैंने जब जोधपुर में यह कहा था कि दोनों दबाव में है, तब जयपुर में खंडन किया था। मेरे तो उनके परिवार से 50 साल से संबंध हैं। दिन भर सदन चला है। अचानक इस्तीफा हुआ है। आरएसएस बीजेपी का कोई राजनीतिक घटनाक्रम चलाने का प्लान है क्या?

सरकार फेयरवेल तक नहीं देगी, यह चौंकाने वाली बात

गहलोत ने कहा- खबरें आ रही है कि सरकार कोई फेयरवेल नहीं देगी यह चौंकाने वाली है, आश्चर्यचकित करने वाली है, दुखद भी है और कई सवाल खड़े करने वाली भी है। समय आने पर मालूम पड़ेगा हकीकत क्या थी?

मैंने 10 दिन पहले ही कहा था उपराष्ट्रपति और लोकसभा अध्यक्ष दबाव में काम कर रहे

गहलोत ने कहा- मैंने अभी 10 दिन पहले जोधपुर में कहा था कि उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ जो राज्यसभा के अध्यक्ष हैं और लोकसभा के अध्यक्ष हैं ओम बिरला जी, दोनों दबाव में काम कर रहे हैं। उसके बाद में धनकड़ साहब जयपुर में आए और कहा कि मैं कोई दबाव में काम नहीं कर रहा हूं, यह उन्होंने कहा था। कहना और बात है हकीकत होना अलग बात है।

गहलोत ने कहा-इसे मैं मामूली घटना नहीं मानता, कोई न कोई मूव तो नहीं है देश के लिए, आरएसएस और बीजेपी छुपा रही हो क्योंकि अचानक लोगों को आश्चर्य हो रहा है।

राष्ट्रपति,प्रधानमंत्री के हार्ट के ऑपरेशन होते हैं तो भी स्वास्थ्य कारणों से इस्तीफा नहीं देते

गहलोत ने कहा- उपराष्ट्रपति का इस्तीफा पूरे देश के लिए चौंकाने वाला है। जो स्वास्थ्य कारणों का हवाला दिया है उसके बारे में पूरे देश में चर्चाएं चल रही हैं। सभी का कहना है कि कोई स्वास्थ्य कारण नहीं हो सकता और कोई कारण होगा। जो अभी बाहर नहीं आया। ऐसा लगता है, क्योंकि उपराष्ट्रपति का इतिहास में पहली बार इस्तीफा हुआ है। प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के हार्ट का ऑपरेशन होता है, बाइपास होता है तो भी इस्तीफे नहीं होते, स्वास्थ्य कारण से समझ नहीं आ रहा । राजस्थान वालों को बहुत धक्का लगा है

गहलोत ने कहा- राजस्थान वालों को बहुत धक्का लगा है क्योंकि वह राजस्थान के रहने वाले हैं। संसद के अंदर और बाहर किसानों के लिए हमेशा आवाज उठाते रहे और अचानक ही उपराष्ट्रपति पद पर हमारा राजस्थान का सपूत बैठा हो इस्तीफा दे दे तो स्वाभाविक है आम लोगों को भी झटका लगा। यह समझ के परे है।

गहलोत ने कहा- जयराम रमेश ने जैसे कहा कि उपराष्ट्रपति को इस्तीफा वापस लेने पर पुनर्विचार करना चाहिए या प्रधानमंत्री को मनाना चाहिए। अगर इस्तीफा वापस लेने की कोई संभावना हो तो मैं भी यही चाहूंगा कि प्रधानमंत्री आगे आए क्योंकि यह घटना देश-विदेश में चर्चा का विषय बनी हुई। क्योंकि प्रधानमंत्री विदेश दौरे पर जा रहे हैं और उपराष्ट्रपति देश में इस्तीफा दे रहा है तो मैं चाहूंगा प्रधानमंत्री प्रयास करें। यह संभव है क्या इस्तीफा वापस हो जाए।

सामाजिक कार्यक्रम से लौट रहे युवक की मौत:सड़क पर बाइक-बॉडी देख लोगों ने एंबुलेंस बुलाई

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा के गंगापुर थाना इलाके में काली मंगरी रोड पर मंगलवार सुबह एक बाइक और युवक लहूलुहान हालत में मिला। राहगीरों ने पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी। युवक को हॉस्पिटल पहुंचाया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। युवक सोमवार रात एक सामाजिक कार्यक्रम में गया था। वहीं से घर लौट रहा था। युवक की शादी 2 महीने पहले हुई थी। गंगापुर थाना के एएसआई शंकर लाल ने बताया-बाइक और युवक के रोड पर पड़े होने की सूचना पर पुलिस और एंबुलेंस पहुंची। युवक की पहचान काली मंगरा का खेड़ा निवासी दशरथ सिंह (21) पुत्र केसर सिंह के रूप में हुई। शव को गंगापुर हॉस्पिटल की मॉर्च्युरी में रखवाया। आज पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजन को सौंप दिया। पहली नजर में सड़क हादसे में मौत होना लग रहा है। परिजन ने बताया- दशरथ सोमवार सुबह बाइक लेकर घर से एक सामाजिक कार्यक्रम में शामिल होने निकला था। वह दिन भर डेलाना बस स्टैंड और आसपास के क्षेत्र में रहा। सोमवार रात 9:30 बजे भाई अमर सिंह से उसकी फोन पर बात हुई थी। इसके बाद उसका मोबाइल बंद हो गया। सुबह ग्रामीणों को लहूलुहान हालत में रोड पर मिला।

दशरथ केसर सिंह का सबसे छोटा बेटा था। 2 महीने पहले ही उसकी शादी हुई थी। दशरथ घर से दो किमी दूर साइट पर जेसीबी चलता था।

सम्पादकीय

सामने आते अतीत के अनछुए पहलू

पिछले कुछ महीनों से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के तिलवाड़ा साकिन, हरियाणा के टोपरा कलां और राजस्थान के बहज नामक पुरातत्व स्थलों से ताम्रयुगीन, महाभारतकालीन, मौर्यकाल, शुंग काल और कुषाण काल के अनेक महत्वपूर्ण पुरावशेष मिले हैं। तिलवाड़ा साकिन गांव में हुए उत्खनन से 4,000 साल पुराने रथ का पहिया मिला है, जो तांबे की परत से ढका हुआ है। 1900 से 1500 ईसा पूर्व के तांबे की कटारें, तलवारें, औजार मिले हैं। तिलवाड़ा साकिन से केवल 10 किमी दूर सिनौली गांव से भी तांबे की परत चढ़े तीन युद्ध रथ और अति दुर्लभ लकड़ी के ताबूत में संरक्षित किए गए आठ मानव कंकाल, युद्ध में इस्तेमाल किए जाने वाले कवच, हेलमेट, तांबे की तलवारें, खंजर, स्वर्ण आभूषण प्राप्त हुए हैं। सिनौली में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआइ) ने सर्वप्रथम 2005 में उत्खनन कार्य कराया था। तब पुरातत्वविदों को यहां से करीब 116 मानव कंकाल, स्वर्णनिधि (बड़ी संख्या में सोने के कंगन, सोने के मनके और सोने की मानवाकृति) प्राप्त हुई थी। तिलवाड़ा साकिन और सिनौली में मिले पुरावशेषों में एकरूपता की झलक मिलती है। यह पूरा परिक्षेत्र कुरु वंश की राजधानी हस्तिनापुर के अंतर्गत आता था। तिलवाड़ा और सिनौली की खुदाई में जो बर्तन और दाह संस्कार के प्रमाण मिले हैं, वे महाभारत, रामायण और वेद जैसे प्राचीन ग्रंथों में वर्णित कथाओं से मेल खाते हैं। दोनों स्थलों से मिले गेरूए मृदभांड और तांबे के बर्तनों की संरचना, नक्काशी और आकार एक जैसा है। इन दोनों स्थलों से मिले अवशेषों की कार्बन डेटिंग भी हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे पुरानी योद्धा जनजातियों में से एक यहां निवास कर रही थी।

प्रधान संपादक - दयाराम दिव्य

सावन के दूसरे सोमवार पर कदमा महादेव में उमड़ा आस्था का सैलाब प्रतापपुरा के पवित्र कदम वृक्ष से मिलती है सकारात्मक ऊर्जा

शाहपुरा राजेन्द्र खटीक।

शाहपुरा-शाहपुरा से लगभग 7 किलोमीटर दूर प्रतापपुरा गांव में स्थित कदमा महादेव

सावन के पवित्र माह के दूसरे सोमवार को कदमा महादेव मंदिर परिसर में भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी।विशेष बात यह रही कि यहां स्थित कदम के वृक्ष ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। मान्यता है कि वृंदावन के बाद कदम का यह दुर्लभ वृक्ष केवल प्रतापपुरा के कदमा महादेव मंदिर में ही पाया जाता है। स्थानीय जनमानस और श्रद्धालुओं का मानना है कि इस वृक्ष

के नीचे बैठने से सकारात्मक ऊर्जा की अनुभूति होती है, और मन को शांति मिलती है।यही कारण है कि दूर-दूर से भक्त यहां दर्शन को आते हैं। इस पावन अवसर पर श्रद्धालुओं ने शिवलिंग पर दूध, जल, बेलपत्र और पुष्प अर्पित कर रुद्राभिषेक किया।मंदिर प्रांगण 'हर हर महादेव' और 'बोल बम' के जयघोष से गूंज उठा।

मंदिर के पुजारी गोरु पौंडरीक ने जानकारी देते हुए बताया कि सावन में यहां प्रतिदिन शिव आराधना के विशेष कार्यक्रम रखे जाते हैं, लेकिन सोमवार को विशेष भजन-कीर्तन और सामूहिक पूजा का आयोजन होता है।

ऐसी मान्यता है स्वामी संध्या पुरी महाराज की समाधि के दर्शन करने मात्र से शरीर की बीमारी ठीक हो जाती है।

यह स्थान आध्यात्मिक ऊर्जा, आस्था और प्रकृति की अनमोल विरासत का अद्भुत संगम बन चुका है।

महिला एवं बाल विकास विभाग की अनदेखी से सहायक पद पर चयन के बावजूद नहीं मिली नियुक्ति, प्रार्थिनी ने कलेक्टर से की न्याय की गुहार

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

सुरज वर्मा

शक्करगढ़ तहसील के ग्राम मेलवा पंचायत किशनगढ़ की निवासी सुनीता कुमारी मीणा ने आंगनबाड़ी सहायिका पद पर चयन होने के बावजूद अब तक नियुक्ति पत्र नहीं मिलने पर गहरी नाराजगी जताते हुए जिला कलेक्टर भीलवाड़ा को न्याय की गुहार लगाई है।सुनीता कुमारी ने बताया कि उन्होंने कार्यालय उपनिदेशक, महिला एवं बाल विकास विभाग शाहपुरा की विज्ञप्ति क्रमांक 2024-25/110 दिनांक 28 जून 2024 के तहत मेलवा ग्राम की आंगनबाड़ी केन्द्र पर सहायिका पद के लिए निर्धारित

तिथि में आवेदन किया था। महिला बाल विकास विभाग, जहाजपुर ने प्राप्त कुल 9 आवेदनों को ग्राम पंचायत किशनगढ़ को ग्राम सभा अनुमोदन हेतु प्रेषित किया था।

ग्राम सभा 2 अक्टूबर 2024 को आयोजित की गई, जिसमें 4 बाहरी आवेदनों को खारिज करते हुए शेष 5 में से गाइडलाइन के अनुसार सर्वाधिक 7 अंक प्राप्त करने वाली सुनीता कुमारी का चयन किया गया। ग्राम सभा ने प्रस्ताव पारित कर महिला एवं बाल विकास विभाग को नियुक्ति हेतु भेजा। इसके बावजूद आज तक उन्हें नियुक्ति पत्र नहीं दिया गया, जबकि उसी सभा में चयनित ग्राम छाछिया की सहायिका को नियुक्ति पत्र जारी कर दिया गया।सुनीता ने बताया कि जब उन्होंने इस मामले की जानकारी महिला बाल विकास अधिकारी जहाजपुर से चाही, तो कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। बाद में ग्राम पंचायत प्रशासक पिंकी मीणा से संपर्क करने पर पता चला कि विभाग द्वारा पुनः दूसरी सूची जारी कर नई प्रक्रिया शुरू कर दी गई है, जो चयनित उम्मीदवार के अधिकारों के विपरीत प्रतीत होती है।सुनीता कुमारी ने जिला कलेक्टर से मांग की है कि पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच कराई जाए और नियमानुसार उन्हें आंगनबाड़ी सहायिका पद पर शीघ्र नियुक्त किया जाए।

भीम आर्मी स्थापना दिवस आजाद समाज पार्टी के कार्यकर्ताओं ने मनाया

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

शाहपुरा राजेन्द्र खटीक।

जहाजपुर-जहाजपुर में हर्ष और उल्लास के साथ आजाद समाज पार्टी व भीम आर्मी के कार्यकर्ता ने भीम आर्मी स्थापना दिवस मनाया।सभी महिलाओं और पुरूषों ने मिठाई खाकर मुह मीठा किया। कार्यकर्ता में खुशी की लहर दौड़ी ।भीम आर्मी जिंदाबाद के नारे लगाए जिसमें बाबा साहब को माल्यार्पण कर भीम आर्मी दिवस मनाया गया सभी कार्यकर्ता मौजूद रहे भीम आर्मी भीलवाड़ा उपाध्यक्ष मंजू रेगर ने कहां की हमें महिला भी इस भीम आर्मी में शामिल अधिक होकर भीम आर्मी को मजबूत बनाएगी। लड़ाई में न्याय दिलाने में भीम आर्मी का पुरा सहयोग रहेगा।शाहपुरा पूर्व जिला अध्यक्ष व जहाजपुर कोटडी विधानसभा प्रत्याशी भेरूलाल रेगर ने कहा की भीम आर्मी एक न्याय का नाम है गरीबों की दांता है भीम आर्मी जहा बैठती हैं न्याय लेकर ही दम लेती हैं दुनिया का विश्वास है।आज के इस कार्यक्रम में भीम आर्मी जहाजपुर तहसील महिला अध्यक्ष फोरी रेगर, जहाजपुर नगर अध्यक्ष आशा, उपाध्यक्ष कांता, सुपरस्टार डांसर किरण आदि महिलाएं व पुरुष मौजूद रहे।सभी ने जहाजपुर बस स्टैंड डॉ. भीमराव अंबेडकर के यहा पर जय भीम के नारे लगाए।

आकोला में त्रिवेणी संगम से पहुंचे कावड़ यात्रियों का स्वागत

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

आकोला (रमेश चंद्र डाड)कस्बे में सोमवार को त्रिवेणी संगम से रूद्र महादेव तक कावड़ यात्रा निकाली। कावड़ यात्रा संघ के सदस्य हरि लाल जाट व नारायण साहू ने बताया कि इस दिन त्रिवेणी संगम (बीगोद) से कावड़ यात्री 11ः15 बजे वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ कावड़ में त्रिवेणी का पवित्र जल भरकर रवाना हुए। जो बीगोद,बोहरी माता चौराया ,सोपुरिया, कुंडी, सवाईपुर चौराहा ,खजीना होते हुए कस्बे के रूद्र महादेव (दर्जी मोहल्ला) 6ः15 पहुंचे। जहां पर पंडित ओम राजस्थला द्वारा लाए गए पवित्र जल से वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ रुद्र महादेव का जलाभिषेक किया। कावड़ यात्रा संघ में राहुल सेन, भैरू प्रजापत, किशन जाट, रामकुमार जाट सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने भाग लिया। कावड़ यात्रिया का ग्रामीणों ने जगह-जगह स्वागत किया तथा अल्पहार करवाया गर्मी की उमस को देखते हुए टेंकर से जल छिड़काव करवाया। जिससे कांवड़ियों को चलने में राहत महसूस हुई।

नवीन जैन नव को मिला अभिव्यंजना काव्य सम्मान 2025

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

आकोला (रमेश चंद्र डाड) कवि नवीन जैन नव को दिल्ली में सामाजिक सरोकार, सजग काव्य सृजन के माध्यम से जनता में जागृति लाने के लिए

ललित फाउंडेशन के राष्ट्रीय अधिवेशन अभिव्यंजना %चतुर्थ% में अभिव्यंजना काव्य सम्मान% से अलंकृत किया जाता है।

संस्थापक अमित शर्मा ने बताया कि नवीन को पंच तारा होटल गौर सरोवर प्रीमियर, ग्रेटर नोएडा में आयोजित अधिवेशन में सम्मानित किया गया । कार्यक्रम के उदघाटन सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व राज्यपाल राजस्थान कलराज मिश्र अतिथि पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा, पद्मश्री अशोक चक्रधर ,हरिओम पंवार

और समापन समारोह के मुख्य अतिथि युगकवि डॉक्टर कुमार विश्वास थे । आयोजन में कविता तिवारी , अमन अक्षर,गौरव चौहान सहित कई विश्व प्रसिद्ध कवि उपस्थित थे ।

स्वच्छता अभियान बना मजाक ,ग्रामीणों ने सीईओ से की कार्यवाही की मांग

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

सुरज वर्मा

भीलवाडा जिले की ग्राम पंचायत बरोदा में स्वच्छता अभियान की गंभीर अनदेखी के खिलाफ ग्रामीणों का सब्र अब जवाब देने लगा है। ग्राम पंचायत बरोड़ा के निवासियों ने क्षेत्र में व्याप्त गंदगी, कीचड़ और टूटी हुई सड़क की समस्याओं को लेकर ज़िला मुख्य कार्यकारी अधिकारी भीलवाड़ा को एक लिखित प्रार्थना पत्र सौंपा है, जिसमें पंचायत की लापरवाही पर सख्त कार्रवाई की मांग की गई है। ग्रामीणों ने अपने पत्र में बताया है की ग्राम पंचायत मुख्यालय बरोड़ा से पंचायत समिति जहाजपुर तक की सड़क बीते 14 वर्षों से जर्जर हालत में है। लगभग 600 मीटर तक की सड़क जगह-जगह से टूट चुकी है और इस पर कीचड़ जमा रहता है, जिससे न केवल आवागमन में बाधा उत्पन्न हो रही है, बल्कि संक्रामक बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। ग्रामीणों का कहना है कि यह मार्ग सरकारी डेयरी से नई मोहल्ला होते हुए तेजोली महाराज तक जाता है, जो एक सार्वजनिक स्थान है। लेकिन चार साल से यहां नियमित सफाई नहीं हुई। कई बार पंचायत समिति से शिकायतें करने के बावजूद कोई सुनवाई नहीं हुई है। बारिश के मौसम में हालात और भी बदतर हो जाते हैं। प्रार्थना पत्र में बताया गया कि पंचायत केवल दिखावे के लिए कभी-कभी सफाई करवाती है, वह भी तब जब कोई अधिकारी आने वाला हो। असली सफाई की जरूरत जब होती है, तब कोई ध्यान नहीं देता। ग्रामीणों ने स्वच्छता अभियान को सिर्फ ÷कागज़ी अभियान÷ बताते हुए प्रशासन से विशेष टीम भेजकर स्थायी समाधान की मांग की है

ग्रामीणों ने मांग की है किः

1.गंदगी और कीचड़ की तत्काल सफाई करवाई जाए

2.सड़क की मरम्मत कर उसे चलने लायक बनाया जाए

3.ग्राम पंचायत की जिम्मेदारी तय की जाए यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं की गई तो ग्रामीण आंदोलन की चेतावनी भी दे चुके हैं। अब देखना यह होगा कि जिला प्रशासन इस ओर क्या कदम उठाता है।

एक महिने के बाद भी कारवाही नहीं,पीड़ित व्यक्ती की ज़मीन पर अवैध कब्जे का बोर्ड को पंचायत ने नहीं हटाया अभी तक

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

अजमेर ज़िले के कादेड़ गांव का वाला मामला सामने आया जहां पूर्व सरपंच मुकेश सोनी व भूमाफियाओं के द्वारा शाहपुरा व केकड़ी रोड़ स्थित भूमि नए खसरा नंबर 295 व वर्तमान खसरा नंबर 995 हैं जिस पर वर्षों से किसान खेती करता आ रहा था लेकिन कादेड़ा पंचायत के सरपंच मुकेश सोनी व भूमाफिया की मिलीभगत से किसान के खेत को पंचायत की शक्तियों का दुरुपयोग कर भूमि को अवैध कब्ज़ा बताया गया और भूमि को गैर मुमकिन पंचायत भूमि बताकर जबरन पंचायत के लेटर पैड पर जबरदस्ती हस्ताक्षर करवा कर पंचायत के अधीन कर ली। पुस्तैनी ज़मीन को छीन कर अब पंचायत का बोर्ड लगा दिया और पंचायती पट्टे जारी करने वाली है

पीड़ित व्यक्ती का आरोप है की ग्राम पंचायत के पुर्व सरपंच मुकेश सोनी से लेकर ग्राम विकास अधिकारी व उच्च अधिकारीयो तक मिलीभगत करके किसी निजी व्यक्ति को फ़ायदा पहुंचाने के इरादे से किसान की ज़मीन को अवैध घोषित करवाई गई है और कई जमीनों पर अवैध कब्जे किए

जबकि कुछ दिन पहले पूर्व सरपंच के खिलाफ़ पहले से ही फर्जी पट्टे वितरित करने की जांच चल रही है जिसमें पुर्व सरपंच मुकेश सोनी दोषी पाए गए प्रशासन ने कारवाही करते हुए पुर्व सरपंच मुकेश सोनी को पद मुक्त किया किन्तु आज़ भी कई भूमी पर अवैध कब्जे कर रखें हैं जिसमें मेरी ज़मीन पुराने नंबर खसरा नंबर 295 हैं जिसमें प्रशासन को पुरी जानकारी मिल जाएंगी और अभी के खसरा नंबर 995 हैं अब सबसे बड़ा सवाल यह पैदा होता है कि पुर्व सरपंच मुकेश सोनी को पद मुक्त करने से क्या फायदा हुआ करोड़ों रुपए कमाने के बाद ऐसे सरपंच पर जुर्माना लगाया जाए और सभी जमीनों पर से अवैध कब्जे हटाए जाएं जानकारी के अनुसार पीड़ित को न्याय अभी तक नहीं मिला ना ही पंचायत का कब्ज़ा नहीं हटाया। ज़िला प्रशासन से आज़ भी न्याय की उम्मीद जता कर बैठे हैं की ज़िला प्रशासन के द्वारा अवैध पंचायत के द्वारा अवैध कब्जे को हटवाए और ऐसे सरपंच पर जुर्माना भी लगाया जाए जिससे आने समय में कोई भी राजकीय शक्तियों का दुरुप्रयोग ना कर सके

कांग्रेस के कई नेताओं में खौफ

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य बघेल की शराब घोटाले में गिरफ्तारी के बाद कांग्रेस के नेताओं में खौफ है। कांग्रेस मुख्यालय से लेकर राज्यों में कांग्रेस कार्यालयों तक इस बात की चर्चा है कि आगे किसकी बारी है। कांग्रेस के नेता खुद ही कयास लगा रहे हैं। आखिर एक एक करके कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं पर केंद्रीय एजेंसियों की गाज गिर रही है। पी चिदंबरम और उनके बेटे कार्ति चिदंबरम को ईडी ने गिरफ्तार किया था और दोनों जेल काट चुके हैं। अब भी गाहे बगाहे छापे और पूछताछ की कार्रवाई चलती रहती है। इसी तरह कर्नाटक के उप मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष डीके शिवकुमार को भी ईडी ने गिरफ्तार किया था और वे भी जेल जा चुके हैं। अब भूपेश बघेल के बेटे को गिरफ्तार किया गया है। इतना ही नहीं शराब घोटाले से लेकर महादेव सट्टा ऐप के घोटाले में बघेल खुद भी निशाने पर हैं। उनके खिलाफ सीबीआई और ईडी की छापेमारी हो चुकी है। तभी कांग्रेस के नेता कयास लगा रहे हैं कि आगे किसकी बारी है? क्या केंद्रीय एजेंसियां बघेल पर हाथ डालेंगी? ध्यान रहे कांग्रेस ने बघेल को सबसे प्रमुख ओबीसी चेहरे के तौर पर पेश किया है। वे कांग्रेस के महासचिव भी बनाए गए हैं। बघेल के अलावा सबसे ज्यादा आशंका भूपेंद्र सिंह हुड्डा को लेकर जताई जा रही है। अगर रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ हरियाणा की किसी भी जमीन के मामले में कोई भी कार्रवाई होती है तो हुड्डा परिवार नहीं बच सकता है। अभी तक कहा जाता है कि हुड्डा ने सब कुछ ठीक किया हुआ है लेकिन राजनीति के आगे दूसरा कोई प्रबंधन काम नहीं आता है। हुड्डा के अलावा राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के परिवार पर भी केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई हुई है। तभी बघेल के बेटे की गिरफ्तारी के बात चौतरफा आशंका है। हंसी मजाक में कांग्रेस नेताओं के बीच चर्चा है कि उनको कमलनाथ से फॉर्मूला पूछना चाहिए कि उन्होंने कैसे अपने भांजे रतुल पुरी को बचाया है। यह भी कहा जा रहा है कि बघेल परिवार पर कार्रवाई का मकसद भी यही है कि कांग्रेस के पुराने और मजबूत नेता कमजोर हों या समझौते के लिए आगे आएं।

बड़ी, पर अधूरी कामयाबी!

टीआरएफ या लश्कर-ए-तैयबा के कुछ ठिकानों को ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने निशाना बनाया। लेकिन उनके समर्थन का पूरा तंत्र नष्ट हो गया है, यह नहीं कहा जा सकता। जब तक यह नहीं होता, हर कामयाबी अधूरी मानी जाएगी। आतंकवादी संगठन 'द रेजिस्टेंस फोर्स' (टीआरएफ) को 'विदेशी दहशतगर्द संगठनों' और 'खास तौर पर चिह्नित वैश्विक आतंकवादी संगठनों' की सूची में डालने का अमेरिका का फैसला स्वागतयोग्य है। इसे भारतीय कूटनीति की सीमित कामयाबी भी समझा जाएगा। टीआरएफ लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा संगठन है। उसने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमलों की जिम्मेदारी ली थी। तब से भारत सरकार का प्रयास रहा है कि इस संगठन, उससे जुड़े नेटवर्क, और उसके संरक्षकों पर अंतरराष्ट्रीय शिकंजा कसे। कहा जा सकता है कि इस दिशा में अब जाकर पहली सफलता मिली है, मगर अभी ये अधूरी है। टीआरएफ या उसका मातृ संगठन लश्कर-ए-तैयबा अपनी गतिविधियां पाकिस्तान में रहते हुए चलाते हैं। उनके कुछ ठिकानों को ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने निशाना बनाया। लेकिन उनके समर्थन का पूरा तंत्र नष्ट हो गया है, यह नहीं कहा जा सकता। यह तभी हो सकता है, जब पाकिस्तान सरकार आतंकवाद का भारत के खिलाफ इस्तेमाल की रणनीति छोड़े। इसलिए अपेक्षित यह है कि अंतरराष्ट्रीय शक्तियों की निगाह इस ओर खींची जाए और वे ताकतें पाकिस्तान पर इस मकसद के लिए प्रभावशाली दबाव बनाएं। क्या अमेरिका ऐसी भूमिका निभाने को तैयार है? अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की शैली से इसका संकेत नहीं मिलता। उन्होंने अपने निवास में पाकिस्तान के सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल असीम मुनीर को आमंत्रित किया। अब चर्चा है कि इस वर्ष क्वॉड शिखर सम्मेलन में भागीदारी के लिए भारत आने के समय ट्रंप पाकिस्तान भी जाएंगे। ट्रंप प्रशासन की ये शैली जारी रही, तो फिर टीआरएफ को आतंकवादी सूची में डालने का उसका कदम महज दिखावटी होकर रह जाएगा। यह भारतीय कूटनीति की भी परीक्षा है। विदेश मंत्री एस। जयशंकर ने कहा है कि टीआरएफ के खिलाफ ताजा अमेरिकी कदम 'आतंकवाद के खिलाफ भारत और अमेरिका के सहयोग की सशक्त पुष्टि' है। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय सहभागियों के साथ भारत का सहयोग जारी रहेगा, ताकि दहशतगर्द संगठनों और उनके प्रॉक्सीज को जवाबदेह ठहराया जा सके। अतः जब तक ऐसा नहीं होता, हर सफलता अधूरी मानी जाएगी। पहलगाम में जघन्य अपराध करने वाले ऐसे आतंकवादियों और उनके संरक्षकों को दंड दिलवाना असल मकसद है। यह लक्ष्य पूरा होना अभी बाकी है।

इज़राइल आखिर हासिल क्या करना चाहता है!

दुनिया भर में राजनीतिक गहमागहमी है। वैश्विक शतरंज की बिसात पर मोहरे इधर-उधर हो रहे है लेकिन इज़राइल अकेला है जो एक जगह अडिग खड़ा हुआ है, भौंहें तनी हुईं, आँखों में आग, और इरादों में वही पुराना रूख, अड़ियल आत्मविश्वास। उसे न वैश्विक आलोचना की परवाह, न अलग-थलग पड़ने का डर है और न तबाह, नष्ट होने की आशंका। इज़राइल लगातार आक्रामक है। आज भी बदला लेते हुए है। एक ऐसी जिद्द के साथ जो अब लगभग सभी को निर्दयी, अहंकारी, और अविचल लगने लगी है। और ऐसा होना इसलिए भी है क्योंकि उसकों ले कर अंतरराष्ट्रीय चुप्पी और उदासीनता बन गई है। मानों दुनिया ने यह मान लिया है कि इज़राइल डरता नहीं है और न ही उसे डराया जा सकता है। जाहिर है सन् 2023 में इजराइल के प्रति दुनिया में सहानुभूति थी अब वही देश भय का कारण बन चुका है। इतिहास की करुणा वहीं अटकी रह गई है, लेकिन समय आगे बढ़ चुका है। पहले जो खुद आशंकित था, अब दूसरों में आशंका भर रहा है। हमास के वीभत्स हमले के डेढ़ साल बाद, इज़राइल ग़ज़ा पार कर गया है—गोलियों की बौछार के साथ गुजरे सप्ताह सीरिया के दमिश्क तक पहुँच गया। प्रधानमंत्री नेतन्याहू की नजरें ईरान पर स्थाई तौर पर हैं। बावजूद इस सबके उसका अंतिम लक्ष्य अब भी अस्पष्ट है। क्या वह आतंकवाद को पूरी तरह समाप्त करना चाहता है? या पूरे समुदायों को मिटा देना उसका इरादा है? या फिर उसकी महत्वाकांक्षा इतनी बढ़ गई है कि वह खुद को अमेरिका और चीन के समकक्ष विश्वशक्ति बनाना चाहता है? मुख्य वजह गजा की तस्वीरें है। हर दिन यह सुनाई देता है, दिखता है कि गजा को इंसानियत से विहीन कर दिया गया है—और यह क्रम जारी है। बीते शनिवार, वहाँ भोजन जुटा रहे 32 फ़िलस्तीनी नागरिक मारे गए। लगभग सभी आम लोग, ज़्यादातर युवा। चश्मदीदों ने इसे 'नरसंहार' बताया, और कहा कि आईडीएफ (इज़राइली रक्षा बल) के सैनिकों ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चलाईं। इस समय ग़ज़ा में 20 लाख से अधिक फ़िलस्तीनी विनाशकारी मानवीय संकट से जूझ रहे हैं। भुखमरी उनके दरवाज़े पर है, और खाद्य सुरक्षा विशेषज्ञ इसके आसन्न खतरे की चेतावनी दे चुके हैं। इसी बीच, इज़राइल की ओर से समस्या का समाधान आया है। और यह वह एक "पुनर्वास योजना है जिसे भयावह माना जा रहा है। इजराइल के रक्षा मंत्री ने गजा में एक "मानवीय शहर" बनाने का प्रस्ताव दिया है-जहाँ एक बार फ़िलस्तीनी प्रवेश कर लें, तो उन्हें केवल किसी तीसरे देश जाने के लिए ही बाहर निकलने की अनुमति होगी। प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने इस योजना को पूर्ण समर्थन दिया है। परंतु पूर्व प्रधानमंत्री एहुद ओलमेर्ट ने लंदन के The Guardian को दिए साक्षात्कार में इस योजना को सीधे-सीधे "कंसन्ट्रेशन कैंप" कहा है। हां, यह इजराइल के ही एक पूर्व प्रधानमंत्री के शब्द हैं, हमारे नहीं। एक महीने पहले, इज़राइल ने ईरान के भीतर घुसकर उसके परमाणु और सैन्य ठिकानों पर हमला किया था। रणनीतिक दृष्टि से यह एक तर्कसंगत कदम था। वर्षों से ईरान की परमाणु महत्वाकांक्षा इज़राइल के लिए एक गंभीर खतरा रही है। मध्य-पूर्व में ईरान का विस्तारवादी रवैया न केवल इज़राइल के लिए बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए चिंता का विषय रहा है। कई देश इससे बचते रहे, लेकिन इज़राइल ने कूटनीति से सबक लेकर एक स्पष्ट, निर्णायक कार्यवाही की। कल्पना कीजिए—यदि भारत ने पाकिस्तान के परमाणु विकास को समय रहते रोक दिया होता, तो आज हमारे पश्चिमी सीमांत क्षेत्र कितने शांत, नियंत्रित और सुरक्षित होते? लेकिन भारत इज़राइल नहीं है—और इज़राइल भारत जैसा व्यवहार नहीं करता। उसने समय की नब्ज पहचानी और 'ऑपरेशन राइजिंग लायन' के तहत ईरान पर हमला किया—उसी तरह जैसे उसने ग़ज़ा में तबाही को भी अपने संप्रभुता की रक्षा के नाम पर सही ठहराया। निस्संदेह, एक परमाणु-संपन्न ईरान विश्व को और अधिक अस्थिर बना देगा। इससे सऊदी अरब जैसे अन्य देश भी परमाणु हथियार की होड़ में शामिल हो सकते हैं। और भले ही परमाणु हथियारों का प्रसार न भी हो, एक परमाणु ईरान इज़राइली सेना की रणनीतिक स्वतंत्रता को सीमित कर सकता है—और यही इज़राइल के लिए सबसे बड़ा खतरा है। लेकिन विडंबना यह है कि ईरान की आक्रामकता से क्षेत्र को बचाने के प्रयास में इज़राइल स्वयं इस पूरे क्षेत्र को अस्थिरता की ओर धकेल सकता है—एक ऐसा अस्तित्वगत संकट जो वह खुद खड़ा कर रहा है। फिलहाल इज़राइल–ईरान संघर्ष थमा हुआ है। दोनों के बीच मौखिक समझौता, सीजफायर हुआ है, जो कभी भी टूट सकता है। तेहरान में अब भी एक कट्टरपंथी धर्मतांत्रिक शासन सत्ता में है। और नेतन्याहू—अब युद्धप्रिय शासक की छवि बन चुके हैं—जिन्हें युद्ध उतना ही प्रिय है जितना सत्ता। दोनों उनके लिए अब हाथ में हाथ डाले चल रहे हैं। खबरें हैं कि नेतन्याहू जल्दबाज़ी में चुनाव कराने की संभावना पर विचार कर रहे हैं। शायद इसी कारण कुछ दिन पहले इज़राइल के लड़ाकू विमानों ने सीरिया के दमिश्क पर बमबारी की। और बमबारी में सीरिया के राष्ट्रपति भवन, रक्षा मंत्रालय और सेना मुख्यालय को निशाना बनाया गया। इज़राइल का दावा है कि यह हमले ड्रूज़ समुदाय पर सीरियाई सरकार के हमलों को रोकने और सुएदा क्षेत्र में असैन्यीकृत क्षेत्र लागू करने के लिए किए गए थे। प्रधानमंत्री नेतन्याहू का यह स्पष्ट गणित है—सैन्य आक्रामकता से न केवल इज़राइल की सुरक्षा बढ़ती है, बल्कि उनका घरेलू राजनीतिक समर्थन भी। इसलिए ईरान पर एक और हमला जल्द हो सकता है। लेकिन यदि नेतन्याहू की सत्ता की लालसा और राजनीतिक लाभ को अलग रख दें, तो भी इज़राइल के आक्रामक क़दम एक बड़ी रणनीतिक मंशा को दर्शाते हैं—बलपूर्वक क्षेत्रीय व्यवस्था को पुनर्परिभाषित करना। परंतु यदि कोई राष्ट्र अपनी संपूर्ण सुरक्षा केवल असीम शक्ति के बल पर चाहता है, तो वह उस अराजकता को ही स्थायी कर देता है जिससे वह भागना चाहता है। अंततः इज़राइल को स्वयं से यह सवाल पूछना होगा—क्या उसके ये क़दम उसकी सुरक्षा की गारंटी हैं? या वह स्वयं और पूरे क्षेत्र को स्थायी संघर्ष में धकेल रहा है?

-श्रुति व्यास

मसला बेहद गंभीर है!

भारत में शैक्षिक ट्रेनिंग और जॉब मार्केट के तकाजों के बीच चौड़ी खाई मौजूद है। इसे कैसे भरा जाएगा? कड़वी हकीकत यही है कि जब ये खाई नहीं भरती, चीन या अन्य देश हमें ब्लैकमेल करने की स्थिति में बने रहेंगे। इंडिया सेलुलर एंड इलेक्ट्रॉनिक एसोसिएशन (आईसीईए) ने भारत सरकार को पत्र लिख कर उन मुश्किलों की जानकारी दी है, जो चीन के अघोषित व्यापार प्रतिबंधों के कारण पेश आ रही हैं। एसोसिएशन ने कहा है कि इन पाबंदियों का हल नहीं निकला, तो चालू वित्त वर्ष में स्मार्ट फोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स का निर्यात 36 बिलियन डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य पूरा नहीं होगा। पिछले वित्त वर्ष में इन सामग्रियों का निर्यात 241 बिलियन डॉलर का रहा। आईसीईए ने खास तौर पर रेयर अर्थ खनिजों के निर्यात पर रोक और अपने विशेषज्ञों को भारत ना भेजने या भारत से वापस बुला लेने संबंधी चीन के कदमों का उल्लेख किया है। एसोसिएशन चाहती है कि भारत सरकार रेयर अर्थ सामग्रियों की सप्लाई सुनिश्चित करने के लिए जापान, दक्षिण कोरिया, और वियतनाम जैसे देशों से बातचीत करे। साथ ही देश के अंदर रेयर अर्थ सामग्रियों एवं पूंजीगत मशीनरी के उत्पादन की क्षमता बढ़ाई जाए। हालांकि आईसीईए ने आगाह भी किया है कि इन सामग्रियों का देश के अंदर उत्पादन या उन्हें जापान या दक्षिण कोरिया से मंगवाने पर कंपनियों की लागत चीन से आई सामग्रियों की तुलना में तीन से चार गुना बढ़ जाएगी। उस हाल में सवाल उठेगा कि क्या महंगी लागत के साथ हुआ उत्पादन अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धी रह पाएगा? बहरहाल, यह तो रेयर अर्थ सामग्रियों की बात है। दूसरा सवाल कहीं ज्यादा गंभीर है। मुद्दा है कि इंजीनियरों और विशेषज्ञों के लिए भारत की चीन पर निर्भरता क्यों है? और इस समस्या का क्या हल होगा? कुछ समय पहले आई अनस्टॉप टैलेंट रिपोर्ट-2025 के मुताबिक पिछले वर्ष भारत में इंजीनियरिंग की डिग्री लेकर निकले 83 प्रतिशत छात्रों और बिजनेस स्कूलों से निकले 46 फीसदी छात्रों को गुजरे मार्च तक ना तो नौकरी मिली और ना इंटर्नशिप का ऑफर उन्हें मिला। इसे इस बात का कारण संकेत माना गया कि देश में शैक्षिक ट्रेनिंग और जॉब मार्केट के तकाजों के बीच चौड़ी खाई मौजूद है। इसे कैसे भरा जाएगा? कड़वी हकीकत यही है कि जब ये खाई नहीं भरती, चीन या अन्य देश हमें ब्लैकमेल करने की स्थिति में बने रहेंगे।

उमा भारती को फिर संभावना दिखने लगी!

मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने सक्रिय राजनीति में वापसी का संकेत दिया है। उन्होंने कहा है कि वे 2029 का लोकसभा चुनाव लड़ सकती हैं। उन्होंने इस बारे में बहुत विस्तार से बात की है, जिसमें बताया कि कैसे वे अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी की टीम में काम करती थीं और कैसे यह लगने लगा था कि वे इन नेताओं की समकालीन हैं, जबकि वे इन नेताओं से 30 से 40 साल छोटी हैं। उमा भारती अभी 63 साल की हुई हैं और ऐसा लग रहा है कि उनको राष्ट्रीय राजनीति में संभावना दिखने लगी है। यह पोस्ट मोदी पोलिटिक्स की तैयारियों का भी संकेत है। जानकार सूत्रों का कहना है कि उमा भारती को लग रहा है कि वे मोदी से 12 साल छोटी हैं तो मोदी के बाद उनके लिए भी संभावना बन सकती है। ध्यान रहे उमा भारती एक समय भाजपा के अंदर भविष्य की संभावना के तौर पर देखी जाती थीं। पार्टी ने उनको मुख्यमंत्री पद का दावेदार घोषित करके 2003 का मध्य प्रदेश का विधानसभा का चुनाव लड़ा था और जबरदस्त बहुमत से जीत हासिल की थी। हालांकि कर्नाटक के ईदगाह मैदान केस में वारंट जारी होने की वजह से उनको इस्तीफा देना पड़ा था। वे खजुराहो और भोपाल से चुनाव जीती हैं और उत्तर प्रदेश की झांसी सीट से भी लोकसभा सांसद रही हैं। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के लोध वोटों पर उनका बहुत बड़ा असर है। तभी उनके सक्रिय राजनीति में लौटने की चर्चा भाजपा के कई समकालीन नेताओं के लिए चिंता की बात हो सकती है। वे पिछड़ी जाति से आती हैं, हिंदुत्व की जो राजनीति आज जमीनी स्तर पर गहरे तक जड़ जमा चुकी है उसकी ओरिजिनल प्रतिनिधि हैं, हिंदी व संस्कृत के साथ साथ धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलती हैं, जो मोदी के बाद नंबर एक होने की होड़ में शामिल दोनों नेताओं की कमजोरी है। तभी उमा भारती की राजनीति पर नजर रखने की जरुरत है।

बेरोज़गारी का संकट विस्फोटक हो रहा!

आज हालात यह हैं कि जब किसी सरकारी पद के लिए भर्ती निकाली जाती है, तो चाहे वह चपरासी का पद हो या क्लर्क का, लाखों की संख्या में अत्यधिक योग्य युवा आवेदन देते हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश और कई अन्य राज्यों में यह स्थिति आम हो चुकी है। यह दृश्य केवल 'बेरोज़गारी' नहीं, बल्कि एक सामाजिक विस्फोट का पूर्व संकेत है। मूलधारा का मीडिया इस संकट की अनदेखी करता रहा है, लेकिन सोशल मीडिया के कैमरों में इन युवाओं की हताशा बार-बार कैद होती है। हाल ही में उत्तर प्रदेश से एक ख़बर आई कि महज़ 2,000 सरकारी पदों के लिए 29 लाख से अधिक आवेदन आए। ऐसा पहली बार नहीं हुआ। समय-समय पर हम सुनते हैं कि आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से स्नातक करने के बावजूद 38 फ़ीसदी युवा बेरोज़गार रह जाते हैं। यह आंकड़े अकेले नहीं हैं, बल्कि वे एक गहरे संकट की गूंज हैं—एक ऐसा संकट जो अब हमारी अर्थव्यवस्था से कहीं अधिक समाज की शांति और लोकतंत्र की स्थिरता को चुनौती दे रहा है। आज हालात यह हैं कि जब किसी सरकारी पद के लिए भर्ती निकाली जाती है, तो चाहे वह चपरासी का पद हो या क्लर्क का, लाखों की संख्या में अत्यधिक योग्य युवा आवेदन देते हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश और कई अन्य राज्यों में यह स्थिति आम हो चुकी है। यह दृश्य केवल 'बेरोज़गारी' नहीं, बल्कि एक सामाजिक विस्फोट का पूर्व संकेत है। मूलधारा का मीडिया इस संकट की अनदेखी करता रहा है, लेकिन सोशल मीडिया के कैमरों में इन युवाओं की हताशा बार-बार कैद होती है। जब यही युवा सड़कों पर आते हैं, तो लाठियाँ बरसाई जाती हैं। जब सरकारी नौकरियों की आस टूटती है, तो वे निजी क्षेत्र की ओर मुड़ते हैं—जहाँ शोषण और अस्थिरता उनका इंतज़ार कर रही होती है। दुर्भाग्य से अब निजी क्षेत्र में भी नौकरियों के अवसर तेजी से घट रहे हैं। बेरोज़गारी की इस विकट स्थिति ने हमारे समाज की संरचना को भी प्रभावित किया है। लाखों युवक-युवतियाँ विवाह नहीं कर पा रहे, पारिवारिक दायित्व नहीं उठा पा रहे, और सामाजिक विषाद का शिकार हो रहे हैं। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि समाजशास्त्रियों और नीति-निर्माताओं के लिए चेतावनी है कि यदि इस वर्ग की आकांक्षाएँ बार-बार कुचली जाती रहीं, तो यह हताशा किसी दिन व्यवस्था के विरुद्ध असंतोष का रूप भी ले सकती है। आज भारत दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा अनौपचारिक मज़दूरी आधारित देश बन चुका है। आईएलओ के अनुसार, देश के 5315 करोड़ मज़दूरों में से लगभग 40 करोड़ अत्यंत असुरक्षित स्थितियों में काम कर रहे हैं—इनकी आमदनी 200 प्रतिदिन से भी कम है। इनमें से अधिकांश शहरी मज़दूर हैं, जिनके पास न सामाजिक सुरक्षा है, न स्थिर वेतन, और न ही गरिमा। देश के चार प्रमुख रोज़गार क्षेत्रों—भवन निर्माण, व्यापार और सेवा, औद्योगिक उत्पादन और खनन—में बेरोज़गारी क्रमशः 50%, 47%, 39% और 23% तक पहुँच चुकी है। ये वही क्षेत्र हैं जो देश के रोज़गार ढाँचे की रीढ़ थे। कोविड लॉकडाउन के दौरान जिस तरह लाखों मज़दूर पैदल गाँवों की ओर लौटे, उसने इस संकट की जड़ता को उजागर कर दिया। लेकिन सवाल यह है कि क्या हमारे नीति-निर्माताओं ने इससे कोई सबक लिया? पाँच आवश्यक नीतिगत उपाय

1। स्थानीय सरकारों को मज़बूती – शहरीकरण के इस युग में स्थानीय निकायों को वित्तीय और प्रशासनिक संसाधनों से सशक्त करना होगा ताकि वे रोज़गार सृजन में अग्रणी भूमिका निभा सकें।

2। मानव श्रम आधारित नगरीकरण – भारी मशीनों के बजाय श्रम-आधारित कार्यप्रणालियों को प्रोत्साहन देने से न केवल शहरी रोज़गार बढ़ेगा, बल्कि ग़रीबों को गरिमा से जीने का अवसर भी मिलेगा।

3। स्वास्थ्य व सफ़ाई क्षेत्रों में रोज़गार योजनाएँ – शहरी बस्तियों में स्वास्थ्य, जल, और सफ़ाई से जुड़ी सेवाओं के लिए विशेष योजनाएँ बनाकर बड़ी संख्या में नौकरियाँ सृजित की जा सकती हैं।

4। शहरी मूलभूत ढाँचे में निवेश – आवास, जल निकासी, सार्वजनिक परिवहन जैसे क्षेत्रों में विकास, स्थानीय रोज़गार को पुनर्जीवित कर सकता है।

5। छोटे व मध्यम उद्योगों का पुनरुद्धार – बेरोज़गारी पर सबसे तेज़ प्रभाव इन्हीं उद्योगों के पुनर्जीवन से पड़ेगा। इनके बंद होने से जो शून्य बना है, उसे भरा जाना आवश्यक है।

2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हर साल 2 करोड़ नौकरियाँ देने का वायदा किया था। अब वह सपना स्वयं बेरोज़गार युवाओं के लिए एक कटाक्ष बन गया है। कुछ वर्ष पहले जब युवाओं ने मोदी जी के जन्मदिन को 'बेरोज़गारी दिवस' के रूप में मनाया, तब मैंने लिखा था कि यह कोई भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि एक राजनीतिक चेतावनी है। आज यह आवश्यक हो गया है कि सभी दल अपने-अपने घोषणा पत्रों में बेरोज़गारी के मुद्दे को केवल चुनावी चारा न बनाएँ, बल्कि मिलकर एक साझा राष्ट्रीय नीति बनाएँ—जिससे न केवल नौकरियाँ पैदा हों, बल्कि उनका न्यायसंगत वितरण भी हो। बेरोज़गारी अब केवल आर्थिक समस्या नहीं रही। यह एक राष्ट्रव्यापी आकांक्षा संकट में बदल चुकी है। इसका समाधान भी किसी एक योजना, वायदे या बजट आवंटन से नहीं निकलेगा। इसके लिए बहुआयामी सोच, राजनीतिक इच्छाशक्ति, और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित पुनर्निर्माण आवश्यक है। यदि समय रहते हम नहीं चेते, तो आने वाला दशक बेरोज़गारी नहीं—विस्फोट का होगा।

बांग्लादेश, अफगानिस्तान के बाद नेपाल पर मेहरबान BCCI, घर में करवाएगा टी20 विश्व कप क्वालीफायर की तैयारी

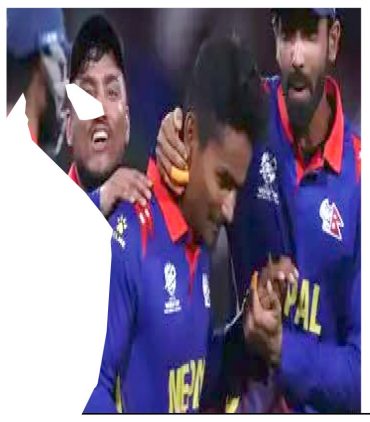

एजेंसी नई दिल्ली

नेपाल की पुरुष क्रिकेट टीम टी20 विश्व कप क्वालीफायर की तैयारी के तहत 20 अगस्त से चार सितंबर तक बेंगलुरु स्थित बीसीसीआई 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (उत्कृष्टता केंद्र) में प्रशिक्षण लेगी। यह कदम 'दोनों देशों के युवाओं को जोड़ने' के उद्देश्य से भारत सरकार के सहयोग से उठाया गया है। टी20 विश्व कप क्वालीफायर इस साल अक्टूबर में होने वाले हैं। मुख्य टूर्नामेंट भारत और श्रीलंका में आयोजित किया जाएगा। भारत ने पिछले साल अगस्त में भी इस उत्कृष्टता केंद्र में नेपाल की टीम के प्रशिक्षण में सहयोग किया था। नेपाल ने पिछले साल जून में हुए टी20 विश्व कप से पहले बड़ौदा और गुजरात क्रिकेट संघ की टीमों के साथ त्रिकोणीय टी20 अभ्यास टूर्नामेंट में भी भाग लिया था। भारत सरकार के एक अधिकारी ने कहा, 'क्रिकेट से जुड़े सहयोग ने भारत और नेपाल के बीच मजबूत और सदियों पुराने ऐतिहासिक संबंधों में एक नया आयाम जोड़ा है। यह क्रिकेट के प्रति साझा जुनून के माध्यम से दोनों देशों के युवाओं को जोड़ रहा है।' विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने भारत की प्रतिबद्धता को दिखाते हुए जनवरी 2024 में नेपाल की पुरुष क्रिकेट टीम और सीएएन (नेपाल क्रिकेट संघ) के प्रतिनिधियों से मुलाकात की थी और 'नेपाल में क्रिकेट के विकास के लिए भारत के समर्थन' से अवगत कराया था। भारत सरकार ने इस साल मार्च में नेपाल में नेपाल की अंडर19 टीमों और दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ की टीम के बीच अभ्यास टूर्नामेंट के आयोजन में भी सहयोग दिया था। नेपाल की महिला टीम ने भी मई में थाईलैंड में हुए एशिया विश्व कप क्वालीफायर की तैयारी के लिए अप्रैल और मई में दिल्ली में एक तैयारी शिविर में भाग लिया था। गिल के साथ दिखे ब्रूनो तो मैग्वायर को सिराज ने की बॉलिंग, मैनचेस्टर युनाइटेड से मिली टीम इंडिया नेपाल क्वालीफायर के फाइनल में पहुंचा। काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास ने इसी महीने भोपाल में एक महीने के पेशेवर प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए नेपाल के तीन होनहार अंडर19 क्रिकेटरों का चयन किया है।

तमाचा, रोना और बैन... हरभजन सिंह और श्रीसंत का वो थप्पड़ कांड, जिसको कभी नहीं भुलाया जा सकता

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व स्पिनर रविचंद्रन अश्विन के यूट्यूब चैनल पर भारत के एक और स्पिनर हरभजन सिंह हाल ही में आए थे, जिसपर दोनों के बीच काफी बात हुई। हरभजन सिंह ने यूट्यूब चैनल पर इस बात का भी जिक्र किया कि अगर उनको कोई चीज अपने करियर में से हटानी हो तो वह श्रीसंत के साथ हुए थप्पड़ कांड को हटाना चाहेंगे। आखिर क्या था यह थप्पड़ कांड, श्रीसंत और भज्जी के बीच किस बात का हुआ था विवाद? आइये, विस्तार से जानते हैं।आईपीएल के पहले सीजन में भारत के पूर्व तेज गेंदबाज एस श्रीसंत और हरभजन सिंह के बीच बड़ा विवाद हुआ था। मोहाली में पंजाब किंग्स और मुंबई इंडियंस के बीच वो मुकाबला खेला गया था। पंजाब ने 183 रन का टारगेट मुंबई को दिया था। लेकिन, मुंबई इंडियंस 9 विकेट के नुकसान पर 116 रन ही बना पाई थी। पंजाब 66 रन से वो मैच जीत गई थी। हरभजन सिंह मुंबई इंडियंस का हिस्सा थे। जब वह बल्लेबाजी करने आए थे तो उनको इरफान पठान ने पहली बॉल पर एलबीडब्ल्यू आउट कर दिया था। इसके बाद जब भज्जी पविलियन लौट रहे थे तो ऐसा कहा जाता है कि उनको श्रीसंत ने कुछ बोला था, जिससे हरभजन गुस्सा हो गए थे। इसके बाद जब मैच खत्म हुआ और दोनों टीमों के खिलाड़ी हाथ मिला रहे थे। उस वक्त जब दोनों मिले तो सबके सामने हरभजन सिंह ने उनको चाटा मार दिया था। इसके बाद श्रीसंत बीच मैदान पर ही रोने लग गए थे। उनको पंजाब के टीममेट्स चुप करा रहे थे। यहां तक कि पंजाब किंग्स की ओनर प्रीति जिंटा भी उनको चुप कराने के लिए वहां पहुंच गई थी। भारत के पूर्व क्रिकेटर फारुख इंजीनियर उस मैच में मैच रेफरी थे। उन्होंने हरभजन सिंह पर 100 परसेंट मैच फीस का जुर्माना लगाया था। इतना ही नहीं बल्कि हरभजन को उसके बाद बचे हुए आईपीएल सीजन से बैन कर दिया गया था।

मनचेस्टर टेस्ट के लिए इंग्लैंड ने अनाउंस की प्लेइंग 11, इस `जादूगर' को अपनी टीम में किया शामिल

एजेंसी मैनचेस्टर

इंग्लैंड ने भारत के खिलाफ 23 जुलाई से शुरू हो रहे चौथे टेस्ट मैच के लिए सोमवार को चोटिल ऑफ स्पिनर शोएब बशीर की जगह बाएं हाथ के स्पिन गेंदबाज लियाम डॉसन को प्लेइंग 11 में शामिल किया। इंग्लैंड पांच मैच की एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी में 2-1 से आगे है जिसने हेडिंग्ले और लॉर्ड्स में क्रमशः पहला और तीसरा टेस्ट जीता था। भारत ने एजबेस्टन में दूसरा टेस्ट जीता था। बशीर तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन भारतीय ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा के एक शक्तिशाली ड्राइव को रोकने की कोशिश में बाएं हाथ की तर्जनी में फ्रेक्चर के बाद सीरीज के बाकी बचे मुकाबलों से बाहर हो गए हैं। बशीर की सर्जरी भी हो चुकी है। ऑफ स्पिनर बशीर ने तीसरे टेस्ट में अंतिम विकेट लेकर इंग्लैंड को 22 रन से करीबी जीत दिलाई थी। बशीर के बाहर होने के कारण 35 वर्षीय डॉसन की टीम में वापसी हुई जिन्होंने अपने तीन टेस्ट

मैच में से पिछला टेस्ट जुलाई 2017 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेला था। काउंटी क्रिकेट में प्रभावी प्रदर्शन के बाद डॉसन की टीम में वापसी हुई है। बता दें कि डॉसम ने अपने फर्स्ट क्लास करिय में 212 मैच खेले हैं और 371 विकेट लिए हैं। वह अच्छी खासी बैटिंग करना भी जानते हैं। मेजबान टीम ने लीड्स में सीरीज का पहला मैच पांच विकेट से जीता था जबकि भारत ने बर्मिंघम में दूसरे टेस्ट में 336 रन की बड़ी जीत दर्ज की थी। भारतीय टीम को अगर इंग्लैंड के खिलाफ इस सीरीज में बने रहना है तो उन्हें हर हाल में मैनचेस्टर टेस्ट जीतना होगा या ड्रॉ कराना होगा।

मैनचेस्टर टेस्ट के लिए इंग्लैंड की प्लेइंग 11

इंग्लैंड की प्लेइंग 11: जैक क्रॉली, बेन डकेट, ओली पोप, जो रूट, हैरी ब्रूक, बेन स्टोक्स (कप्तान), जेमी स्मिथ, लियाम डॉसन, क्रिस वोक्स, ब्राइडन कार्स और जोफ्रा आर्चर।

भारत की संभावित प्लेइंग 11: केएल राहुल, यशस्वी जायसवाल, साई सुदर्शन, शुभमन गिल (कप्तान), ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रविंद्र जडेजा, वाशिंगटन सुंदर, शार्दुल ठाकुर, मोहम्मद सिराज, अंशुल कंबोज और जसप्रीत बुमराह।

इस खिलाड़ी को प्लेइंग-11 में रखो, लेकिन... इंग्लैंड के पेसर ने बताया, कहां फंसा है भारत का पेच

एजेंसी मैनचेस्टर

इंग्लैंड के पूर्व तेज गेंदबाज स्टीव हार्मिसन का मानना है कि भारत को चौथे टेस्ट के लिए अपनी प्लेइंग 11 में कुलदीप यादव को शामिल करने पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि पहले से ही संतुलित टीम में इस कलाई के स्पिनर को शामिल करना चयन की दुविधा पैदा कर सकता है। ओल्ड ट्रैफर्ड की पिच से मैच आगे बढ़ने के साथ स्पिन गेंदबाजी को मदद मिलने की उम्मीद है और हार्मिसन ने कहा कि भारत को बुधवार से इंग्लैंड के खिलाफ शुरू हो रहे चौथे टेस्ट से पहले साहसिक फैसला करना होगा कि उसे तीन स्पिनरों के साथ खेलना है या नहीं। हालांकि अगर मेहमान टीम दो स्पिनरों के साथ खेलने और कुलदीप को शामिल करने का फैसला करती है तो उसे वाशिंगटन सुंदर या रविंद्र जडेजा में से किसी एक को बाहर करना होगा जिन्होंने अब तक सीरीज में अच्छा प्रदर्शन किया है। 'जियोस्टार' के विशेषज्ञ हार्मिसन ने कहा, 'चौथे टेस्ट के विकेट से कुलदीप को उछाल नहीं मिलेगा लेकिन जैसे-जैसे टेस्ट मैच आगे बढ़ेगा, इससे स्पिन गेंदबाजी को मदद मिलेगी। पिछले तीन टेस्ट मैच पांचवें दिन तक चले हैं इसलिए भारत को दूसरे या तीसरे स्पिनर के साथ खेलने पर गंभीरता से विचार करना होगा।' उन्होंने कहा, 'फिलहाल उनकी टीम संतुलित है लेकिन चुनौती कुलदीप यादव को टीम में लाने का तरीका ढूंढने की है। आप वाशिंगटन सुंदर या रविंद्र जडेजा को बाहर नहीं कर सकते। तो क्या आप तीन स्पिनर खिला सकते हैं? यह एक बड़ा फैसला होगा, विशेषकर जसप्रीत बुमराह की स्थिति को देखते हुए।' बुधवार से शुरू हो रहे चौथे टेस्ट से पहले इंग्लैंड पांच मैच की श्रृंखला में 2-1 से आगे है। हार्मिसन को उम्मीद है कि ओल्ड ट्रैफर्ड की परिस्थितियां एजबेस्टन और लॉर्ड्स जैसी ही होंगी - कम स्कोर वाली, कम गति और उछाल लेकिन जैसे-जैसे मैच आगे बढ़ेगा तो पिच टूटेगी। हार्मिसन ने कहा, ' यहां लगभग तीन महीने से बारिश नहीं हुई है और अगर इंग्लैंड में कहीं बारिश होने वाली है तो वह मैनचेस्टर में होगी। अगर कोई ऐसा मैदान है जहां आप दो या तीन स्पिनरों के साथ खेलने पर विचार कर सकते हैं तो वह मैनचेस्टर है।' हार्मिसन को उम्मीद है कि भारत अधिक स्पिनरों को खिलाने पर विचार करेगा लेकिन उन्हें इंग्लैंड के ऐसा करने की उम्मीद कम है। उन्होंने कहा, 'इंग्लैंड ऐसा रास्ता नहीं अपनाएगा, उनके पास लियाम डॉसन हैं लेकिन भारत इस पर विचार कर सकता है। मुझे उम्मीद है कि विकेट एजबेस्टन और लॉर्ड्स जैसा ही होगा जो खेल आगे बढ़ने के साथ टूटेगा और बाद में टर्न देगा। लेकिन मुझे इसमें अधिक गति या उछाल नहीं दिख रहा है और एक बार फिर हम कम स्कोर वाला मैच देख सकते हैं।'

जसप्रीत बुमराह के मैनचेस्टर टेस्ट खेलने पर टूटा सस्पेंस, मोहम्मद सिराज ने एक लाइन में सब साफ कर दिया

एजेंसी मैनचेस्टर

भारतीय तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज ने सोमवार को जसप्रीत बुमराह के बुधवार से ओल्ड ट्रैफर्ड में शुरू हो रहे चौथे टेस्ट मैच में खेलने की पुष्टि की। काम के बोझ के प्रबंधन को देखते हुए बुमराह के पांच में से तीन टेस्ट में खेलने की योजना बनाई गई है। यह स्टार तेज गेंदबाज दूसरे टेस्ट में नहीं खेला था जिसमें भारत ने शानदार जीत हासिल की थी। इसके बाद वह लॉर्ड्स टेस्ट में खेले जिसे भारत 22 रन से हार गया था। भारत के 1-2 से पिछड़ने के बीच पूर्व भारतीय कप्तान अनिल कुंबले ने हाल ही में आखिरी दो टेस्ट मैच में इस स्टार तेज गेंदबाज को खिलाने की जरूरत पर बात की थी। मैनचेस्टर में टीम के पहले आउटडोर अभ्यास सत्र के बाद सिराज ने कम से कम चौथे टेस्ट के लिए बुमराह की उपलब्धता की पुष्टि कर दी। सिराज ने संवाददाताओं से कहा, 'जहा तक मुझे पता है जस्सी भाई (बुमराह) खेलेंगे, हमारा संयोजन दिन-प्रतिदिन बदल रहा है (चोटों के कारण)।' अगले मैच की योजनाओं के बारे

में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, 'इंग्लैंड के खेलने के तरीके को देखते हुए हमारी योजना अच्छी लाइन और लेंथ के साथ गेंदबाजी जारी रखने की है। हम चाहते हैं कि वे पिछले मैच की तरह धैर्य के साथ खेलें। हमें टेस्ट क्रिकेट खेलने में अच्छा लगा।' अर्शदीप सिंह के हाथ की चोट के कारण मैनचेस्टर टेस्ट से बाहर होने के बाद भारत ने तेज गेंदबाज अंशुल कंबोज को टीम में शामिल किया है। नितीश रेड्डी भी घुटने की चोट के कारण बाकी बची सीरीज से बाहर हो गए हैं जिससे टीम को अपने संयोजन में बदलाव करना पड़ा है। ग्रोइन की चोट से जूझ रहे आकाश दीप ने सोमवार को मुख्य नेट पर गेंदबाजी नहीं की। जयपुर के हथिनी कुंड में युवकों ने की अश्लील हरकतें, बाबा ने फटकारा तो एक ने उठाई लाठी फिर... जटाधारी ने दिखा दिए 'दिन में तारे' सिराज ने संयोजन के बारे में अधिक जानकारी नहीं देते हुए कहा, 'आकाश दीप की ग्रोइन में तकलीफ है, फिजियो जांच कर रहे हैं।उन्होंने सुबह भी गेंदबाजी की थी। अभी तक फिजियो से प्रतिक्रिया नहीं मिली है। अर्शदीप के चोटिल होने के बाद अंशुल को टीम में शामिल किया गया है। उन्हें शुभकामनाएं।' तेज गेंदबाज बुमराह ने सतह की फिसलन के कारण नेट पर अधिक देर तक गेंदबाजी नहीं की और फिर मैदान पर जाकर गेंदबाजी की।

व्यापार

भारत ने खींच दी है लक्ष्मण रेखा... कैसे होगी अमेरिका से डील 1 अगस्त की डेडलाइन भी आ गई पास

एजेंसी नई दिल्ली

भारत और अमेरिका के बीच व्यापार समझौते को लेकर अनिश्चितता कायम है। यह तब है जब 1 अगस्त की डेडलाइन भी करीब आ गई है। इसके बाद अमेरिका अन्य देशों से आयात पर जवाबी टैरिफ लगाने वाला है। हालांकि, भारत आशावादी बना हुआ है। उसे उम्मीद है कि बातचीत आखिरकार द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) के पहले चरण पर हस्ताक्षर करने के साथ खत्म होगी। इसकी समय सीमा सितंबर-अक्टूबर 2025 तय की गई है। दरअसल, भारत ने कुछ मुद्दों पर अपनी 'लक्ष्मण रेखा' खींच दी है। यानी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर वह कोई समझौता करने को तैयार नहीं है। यही डील न हो पाने का कारण है। भारतीय वार्ताकार टीम अमेरिका से भारत लौट आई है। भारत अभी भी अपनी बात पर कायम है। उसका साफ कहना है कि कृषि, डेयरी और जीएम फसलें व्यापार वार्ता का हिस्सा नहीं होंगे। यह भी बताया गया कि व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने के लिए आगे भी बातचीत की जरूरत पड़ सकती है। सूत्रों ने कहा, 'अब देखना होगा कि आगे क्या करना है। भारत में भी इस पर विचार चल रहा है कि कैसे आगे बढ़ा जाए।' भारत के ऊपर 840 मिसाइलें दागकर शीशा भी नहीं तोड़

पाया, पाकिस्तानी हथियारों की खुली पोल इंग्लैंड से चौथे टेस्ट से पहले भारतीय टीम में बड़ा बदलाव, जसप्रीत बुमराह का साथ देने आ गया CSK का यॉर्कर किंग भारत और अमेरिका के बीच अंतरिम व्यापार समझौते पर पांचवें दौर की बातचीत 14-17 जुलाई तक वाशिंगटन में हुई। भारतीय टीम का नेतृत्व वाणिज्य विभाग के विशेष सचिव राजेश अग्रवाल ने किया। अमेरिका 1 अगस्त से भारत पर 26% का जवाबी शुल्क लगाने की तैयारी में है। इसमें सभी देशों पर लगने वाला 10% का बेसलाइन शुल्क भी शामिल है। डील न हो पाने का मुख्य कारण दोनों देशों के बीच कुछ संवेदनशील क्षेत्रों पर मतभेद और रेसिप्रोकल टैरिफ का खतरा है। भारत कृषि, डेयरी और जीएम फसलों जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में अपने घरेलू उद्योगों और करोड़ों किसानों की आजीविका की रक्षा के लिए अड़ा हुआ है। किसानों के संगठन भी सरकार पर दबाव बना रहे हैं। वे चाहते हैं कि इन क्षेत्रों को व्यापार समझौते से बाहर रखा जाए। अमेरिका ने 1 अगस्त से भारत सहित अन्य देशों पर 26% का जवाबी टैरिफ लगाने की योजना बनाई है। इसमें 10% का बेसलाइन टैरिफ शामिल है। यह टैरिफ भारतीय निर्यातकों के लिए टेंशन का कारण बना हुआ है। इससे अमेरिकी बाजार में भारतीय उत्पाद महंगे हो जाएंगे। अमेरिका इस टैरिफ को एक हथियार की तरह इस्तेमाल कर रहा है ताकि भारत को रियायतें देने के लिए मजबूर किया जा सके। पांचवें दौर की बातचीत के बाद भी भारत के वार्ताकार राजेश अग्रवाल के नेतृत्व में टीम को आगे की चर्चाओं की आवश्यकता महसूस हुई है। इससे पता चलता है कि मुख्य मुद्दों पर अभी भी सहमति नहीं बन पाई है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि डोनाल्ड ट्रंप के तरीके को लेकर भी कुछ चिंता है। मसलन, वह सार्वजनिक रूप से बड़ी रियायतों की घोषणा कर सकते हैं, जिन पर आधिकारिक वार्ताकारों के बीच शायद सहमति बनी भी नहीं हो। इससे भारत के दीर्घकालिक हितों को नुकसान हो सकता है। यही कारण है कि भारत इस पूरे मामले में बहुत फूंक-फूंककर कदम बढ़ा रहा है।

आधे से ज्यादा भारतीयों ने क्यों मकान खरीदने की उम्मीद छोड़ी एक्सपर्ट ने समझाया `सट्टे' का गणित

एजेंसी नई दिल्ली

भारत में अपना मकान खरीदने का सपना अब लाखों मध्यमवर्गीय भारतीयों के लिए सपना बनता जा रहा है। एक चार्टर्ड अकाउंटेंट के पोस्ट में बताया गया है कि कैसे भारत का रियल एस्टेट सेक्टर अब सुरक्षा का रास्ता नहीं, बल्कि असमानता का गढ़ बन गया है। इस पोस्ट के अनुसार, 59% भारतीयों ने मकान खरीदने की उम्मीद छोड़ दी है। इसका कारण सिर्फ बढ़ती कीमतें नहीं, बल्कि एक ऐसा टूटा हुआ सिस्टम है जो वेतनभोगी वर्ग को किनारे करके सट्टेबाजी से धन कमाने वालों को बढ़ावा दे रहा है। यह पोस्ट इस बात पर रोशनी डालता है कि कैसे पिछले पांच सालों में प्रमुख शहरों में प्रॉपर्टी की कीमतें दोगुनी हो गई हैं, जबकि औसत आय में मामूली बढ़ोतरी हुई है। इससे मकान खरीदना लगभग असंभव हो गया है। चार्टर्ड अकाउंटेंट नितिन कौशिक के पोस्ट ने ऑनलाइन दुनिया में हलचल मचा दी है। इस पोस्ट में भारत के हाउसिंग संकट को आंकड़ों के साथ उजागर किया गया है। यह पोस्ट बताती है कि लाखों मध्यम वर्ग के भारतीय मकान खरीदने से वंचित हो रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म

'एक्स' पर किए गए पोस्ट के अनुसार, 59% भारतीयों ने घर खरीदने की उम्मीद छोड़ दी है। यह उनकी पसंद नहीं है, बल्कि बढ़ती कीमतों के कारण है। महंगाई एक समस्या है। लेकिन, पोस्ट में एक ऐसी व्यवस्था को दोषी ठहराया गया है जो वेतन पाने वाले लोगों को पीछे छोड़ देती है। सट्टेबाजी से होने वाली कमाई को बढ़ावा देती है। पिछले पांच सालों में भारत के टॉप आठ शहरों में प्रॉपर्टी की कीमतें दोगुनी हो गई हैं। 2018 में कीमतें 5,500 रुपये प्रति वर्ग फीट थीं, जो 2023 में बढ़कर 11,000 रुपये हो गईं। इसके उलट औसत सैलरी में मामूली बढ़ोतरी हुई है। 2019 में सैलरी 1.35 लाख रुपये प्रति वर्ष थी, जो 2024 में बढ़कर 1.80 लाख रुपये हो गई, यानी सिर्फ 33% की बढ़ोतरी। नितिन कौशिन ने पोस्ट में लिखा, 'वेलकम टू द ग्रेट इंडियन इनइक्वलिटी।' इसका मतलब है, भारत में असमानता बढ़ रही है। पोस्ट में यह भी कहा गया है कि होम लोन के लिए 5-20-40 का नियम अब काम नहीं करता। इस नियम के अनुसार, अगर आपकी सालाना इनकम 10 लाख रुपये है तो भी आप 2 करोड़ रुपये का घर नहीं खरीद सकते। इसके लिए आपको 20 साल तक अपनी पूरी सैलरी बचानी होगी। पोस्ट में दावा किया गया है कि काले धन से यह सिस्टम कैसे चल रहा है। 1 करोड़ रुपये की प्रॉपर्टी पर 32.5 लाख रुपये का टैक्स लगना चाहिए। लेकिन, लोग प्रॉपर्टी को कम कीमत पर रजिस्टर कराते हैं और बाकी पैसा कैश में देते हैं। इससे टैक्स की चोरी होती है। सरकार को सिर्फ 10% टैक्स मिलता है। पोस्ट में आगे बताया गया, 'यह सिस्टम आपको बेहतर तरीके से धोखा देना सिखाता है, न कि बेहतर तरीके से कमाना।'

लगातार दो सत्रों की गिरावट के बाद शेयर बाजार में तेजी कारोबार

एजेंसी मुंबई

लगातार दो सत्रों की गिरावट के बाद भारतीय शेयर बाजार सोमवार के कारोबारी सत्र में तेजी के साथ बंद हुआ। दिन के अंत में सेंसेक्स 442.61 अंक या 0.54 प्रतिशत की बढ़त के साथ 82,200.34 और निफ्टी 122.30 अंक या 0.49 प्रतिशत की तेजी के साथ 25,090.70 पर था। बाजार की तेजी का नेतृत्व बैंकिंग शेयरों ने किया। निफ्टी बैंक 1.19 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुआ। इसके अलावा फाइनेंशियल सर्विसेज, मेटल, रियल्टी, मीडिया, एनर्जी, प्राइवेट बैंक और कमोडिटी सबसे ज्यादा बढ़ने वाले इंडेक्स थे। आईटी, पीएसयू बैंक, फार्मा, मेटस और एफएमसीजी इंडेक्स लाल निशान में बंद हुए। सेंसेक्स पैक में इटरनल (जोमैटो), आईसीआईसीआई बैंक, एचडीएफसी बैंक, एमएंडएम, बीईएल, कोटक महिंद्रा बैंक, बजाज फिनसर्व, एलएंडटी, टाटा मोटर्स, पावर ग्रिड, टाइटन, बजाज फाइनेंस और अदाणी पोर्ट्स टॉप गेनर्स थे। रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचसीएल टेक, टीसीएस, एचयूएल, आईटीसी, मारुति सुजुकी, टेक महिंद्रा, एनटीपीसी, इन्फ्रोसिस, एशियन पेंट्स और सन फार्मा टॉप लूजर्स थे। लार्जकैप के साथ मिडकैप में भी तेजी देखी गई। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 363.85 अंक या 0.62 प्रतिशत की तेजी के साथ 59,468.35 पर बंद हुआ। हालांकि, निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 1.35 अंक की मामूली गिरावट के साथ 18,958.30 पर बंद हुआ। आशिका इंस्टीट्यूशनल इक्विटीज की ओर से कहा गया कि निफ्टी में आज का कारोबारी सत्र बेहद उतार-चढ़ाव भरा रहा। 24,999 पर खुलने के बाद इसमें दोनों दिशाओं में उतार-चढ़ाव देखा गया। दिन के दौरान निफ्टी ने 24,882 के निचले स्तर को छुआ। फिर जोरदार खरीदारी हुई और 25,079 के उच्च स्तर को छूने में कामयाब रहा। ब्रोकरेज फर्म ने आगे कहा कि अमेरिका और भारत के बीच चल रही व्यापार वार्ताओं को लेकर लगातार बनी अनिश्चितता के कारण समग्र बाजार लाभ में कमी आई और निवेशक आगे के संकेतों के लिए इन उच्च स्तरीय चर्चाओं के परिणामों पर बारीकी से नजर रख रहे हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक दयाराम दिव्य द्वारा मुद्रक वेदांत प्रभाकर, मेधा कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, ऑफिस नं. 128, वार्ड नं. 25, नंदभवन कांवाखेड़ा पार्क के पास, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं एस-20, प्रतापनगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक दयाराम दिव्य 96949 57624, 87695 58132 * PRB एक्ट के तहत ख़बरों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा